



सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ । नाम उद्धारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥



मनोज शर्मा

शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतगं जब देवलोक जाने लगे, तब शबरी भी साथ जाने की जिद करने लगे। शबरी की उप्र दस वर्ष थी। वो महर्षि मतगं का हाथ पकड़ रोने लगी। महर्षि शबरी को रोते देख व्याकुल हो उठे। शबरी को समझा पुरुष। इस आप्ति में भगवान आएंगे, तुम यहीं प्रतीक्षा करो। अवध शबरी इतना अवश्य जानी थी कि गुरु का वाक्य सत्य होकर रहेगा, उसने फिर पूछा-कब आएंगे?

महर्षि मतगं विकलदर्शी थे। वे भूत भविष्य सब जानते थे, वे ब्रह्मांश्च थे। महर्षि शबरी के आगे घुटों के बल बैठ गए और शबरी को नमन किया। आसपास उपस्थित सभी ऋषिगण असम्प्रज्ञसे दूध गए। वे उलट केसे हुआ।

गुरु यहां शिष्य को नमन करे, ये कैसे हुआ? महर्षि के तेजे के आगे कोई बोल न सका।

पुरी अभी उनका जन्म नहीं हुआ। अभी दशरथ जी का लम्बी भी नहीं हुआ इनका कौशल्या से विवाह होगा। फिर भगवान की लम्बी प्रतीक्षा होगी। फिर दशरथ जी का विवाह सुमित्रा से होगा। फिर प्रतीक्षा।

फिर उनका विवाह कैकई से होगा। फिर प्रतीक्षा..।

फिर उनका विवाह कैकई से होगा। फिर प्रतीक्षा। शबरी बूढ़ी ही गई। लेकिन प्रतीक्षा उसी अवध चित्त से करती रही। और एक दिन उसके बिछाए, फूलों पर प्रभु श्रीराम के चरण पड़े। शबरी का कंठ अवरुद्ध हो गया। आँखों से अशुद्धों की धारा फूट पड़ी। मुरु का कथन सत्य हुआ। भगवान उसके घर आ गए। शबरी की प्रतीक्षा का फल ये रसा कि निन राम को कभी तीनों माताओं ने जूड़ा नहीं खिलाया, उहां राम ने शबरी का जूड़ा खाया। ऐसे पतंत पावन मयादी, पुरुषोत्तम, दीन को साक्षी राम जी की जय हो। जय हो। बृद्धा शीलीनी के मुंह से स्वर/बोल फूटे कहो राम! शबरी की कुटिया को ढूँढ़ने में अधिक कट तो नहीं हुआ..? राम मुस्कुराए- वहां तो आना ही था मां, कट का क्या मोल/मूल..? जन्मते हो राम! तुहारी प्रतीक्षा तब से कर रही है, जब तुम जन्मे भी नहीं थे, वह भी नहीं जानी थी कि तुम कैन

अबोध शबरीर इतनी लंबी प्रतीक्षा के समय को माप भी नहीं पाई।

वह फिर अधीर होकर पूछे लगी- इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे पूरी होगी गुरुदेव महर्षि मतगं बोले- वे इश्वर हैं, अवश्य ही आएं। वह आवी निश्चित है। लेकिन यदि उनकी इच्छा हुई तो काल दर्शन के इस विज्ञान को पेरे रखकर वे कभी भी आ सकते हैं। लेकिन आएंगे अवश्य..!

जम मरण से पेरे उहें जब जस्तर हुई तो प्रह्लाद के लिए खबे से भी निकल आये थे। इसलिए प्रतीक्षा करना। वे कभी भी आ सकते हैं। तीनों काल ऊमारे गुरु के रूप में मुझे याद रखेंगे। शबद वही में तब का फल है। शबरी गुरु के आदेश को मान वहीं आश्रम में रुक गई। उसे हर दिन प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा रहती थी। वह जानी थीं समय का चक्र उनकी उंगली पर नाचता है, वे कभी भी आ सकते हैं।

हर रोज रासे में फूल बिछाती है और हर क्षण प्रतीक्षा करती। कभी भी आ सकते हैं। हर तरफ फूल बिछाकर हर क्षण प्रतीक्षा।

शबरी बूढ़ी ही गई। लेकिन प्रतीक्षा उसी अवध चित्त से करती रही। और एक दिन उसके बिछाए, फूलों पर प्रभु श्रीराम के चरण पड़े। शबरी का कंठ अवरुद्ध हो गया। आँखों से अशुद्धों की धारा फूट पड़ी। मुरु का कथन सत्य हुआ। भगवान उसके घर आ गए। शबरी की प्रतीक्षा का फल ये रसा कि निन राम को कभी तीनों माताओं ने जूड़ा नहीं खिलाया, उहां राम ने शबरी का जूड़ा खाया। ऐसे पतंत पावन मयादी, पुरुषोत्तम, दीन को साक्षी राम जी की जय हो। जय हो। बृद्धा शीलीनी के मुंह से स्वर/बोल फूटे कहो राम! शबरी की कुटिया को ढूँढ़ने में अधिक कट तो नहीं हुआ..? राम मुस्कुराए- वहां तो आना ही था मां, कट का क्या मोल/मूल..? जन्मते हो राम! तुहारी प्रतीक्षा तब से कर रही है, जब तुम जन्मे भी नहीं थे, वह भी नहीं जानी थी कि तुम कैन



धूनष तीर लेकर खड़े हैं बाल रूप में भगवान श्रीराम

अयोध्या के गर्भगृह में स्थापित रामलला की मूर्ति मंत्रमुद्ध करने वाली है। रामलला की प्रतिमा को देखते से लगता है कि साक्षत श्री राम खड़े हैं। उनके चेहरे पर पर मधुर मुकुलान है। हाथों में धूनष हैं। एक हाथ में तीर है। श्रीराम के उन्नत और भव्य ललाट पर एक लाल टीका लगा है। जो मूर्ति को और भव्य बना रहा है।

बंद गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि, महा मोह तम पुंज, जासु बघन रवि कर निकर

हो? कैसे दिखते हो? क्यों आओगे मेरे पास ? बस इतना ज्ञात था कि कोई पुरुषोत्तम आएगा, जो मेरी प्रतीक्षा का अंत करेगा।

राम ने कहा- तभी तो मेरे जन्म के पूर्व ही तब हो चुका था कि राम को शबरी के आश्रम में जाना है। एक बात बताते होंगे भक्ति के अंतिम व्यक्ति के अस्तित्व के लिए आवश्यक होता है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

राम का जन्म लगे, फिर उनका विवाह माता

जी के साथ होता है। उनके अन्दर दिलीप, रघु और

अवन्धी के गुणों का सामंजस्य है। उनके बालों के लिए उनकी जीवनी अवध चित्त से लगती है।

दिन रात उसकी आराधना करता है...! (वनरी भाव) पर मैं वह भगवन हर्षी अपनाया। मैं तो उस बिल्ली के बच्चे की भाँति थी, जो अपनी माँ को पकड़ता ही नहीं, बल्कि निश्चिन्द बैठा रहता है कि मैं हूँ न, वह स्वर्वं ही मेरी रका करेगी, और माँ सच्चय तो उसके लिए आवश्यक है। (माजारी भाव)

राम मुस्कुराकर रह गए..!! भीलन ने पुष: कहा- सोची ही हूँ बुराई भी तिनक अच्छाई होती है न... कहाँ सुदूर उत्तर के तुम, कहाँ दक्ष देवी मैं मैं तुम प्रतिविर रघुकुल के भविष्य, मैं बता की भीलनी। यदि रावण का अंत नहीं करना होता तो तुम काहा-

राम आगम्हल से निकला है, ताकि भारत विश्व को संदेश दे सके कि एकी सीधी वेता के अवंछित अच्छाई विश्व के लिए आवश्यक है, जो भारत विश्व को देखता है। राम की वन के घूमती है।

राम आगम्हल से आते..? राम आगम्हल से आते आया है..? राम वारण का वध तो लक्षण आपने पूछे तो जैराम के लिए आवश्यक है। राम वारण के लिए आवश्यक है। राम वारण के लिए आवश्यक है।

राम आगम्हल से आते आया है, ताकि भारत विश्व को बता सके कि एक अन्याय और आत्मक का अंत करना हो। राम आगम्हल से आते आया है, ताकि भारत

